AXIS BANK FOUNDATION

banglanatak.com
CONTACT BASE

बांस हस्तशिल्प

हरे सोने का सौंदर्य

सरायकेला खरसावाँ | झारखंड
मयूरभंज और कोरापुट | ओडिशा

> "आदिवासी समुदायों द्वारा बांस का उपयोग उनके जीने के टिकाऊ (sustainable) तरीके और प्रकृति के प्रति उनके सम्मान का एक प्रमाण है।"
>
> - मेधा पाटकर

Roots to Prosperity
समृद्धि की जड़ें

'समृद्धि की जड़ें' एक बदलाव लाने वाली यात्रा है, जिसे 'कॉन्टैक्ट बेस' द्वारा चलाया जा रहा है और 'एक्सिस बैंक फाउंडेशन' इसमें सहायता कर रहा है। इस पहल का लक्ष्य पारंपरिक कलाकारों को कुशल व्यापारियों के रूप में सशक्त बनाना है, और साथ ही सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देना है। यह परियोजना ओडिशा के कोरापुट और मयूरभंज जिलों और झारखंड के सरायकेला-खरसावाँ में काम करती है। ये क्षेत्र अपनी प्राकृतिक सुंदरता और समृद्ध स्थानीय कला परंपराओं के लिए जाने जाते हैं।

इस परियोजना के माध्यम से 5,500 से अधिक ग्रामीण कलाकारों की मदद की जा रही है। यह उन्हें हुनर निखारने, सीधे बाज़ार तक पहुँचने, अपने छोटे व्यवसाय बनाने और सांस्कृतिक पर्यटन को बेहतर बनाने में मदद करती है। इस पहल का मानना है कि संस्कृति केवल पुरानी यादें नहीं है, बल्कि यह कलाकारों की पहचान, सम्मान और बेहतर भविष्य की संभावना है।

स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करके, 'समृद्धि की जड़ें' समावेशी विकास और सुरक्षित आजीविका को बढ़ावा देती है। यह ब्रोशर 'बांस की टोकरी बनाने की कला' को प्रस्तुत करता है—जो सदियों पुरानी एक ऐसी परंपरा है, जो भारत की संस्कृति और पर्यावरण से गहराई से जुड़ी हुई है।

कला के बारे में

About the craft

बांस से टोकरी बनाना भारत में रोज़मर्रा की ज़िंदगी का एक अहम हिस्सा है, खासकर पूर्वी क्षेत्रों में। यह लोगों और प्रकृति के बीच के गहरे रिश्ते को दर्शाता है। ग्रामीण समुदाय अपनी घरेलू ज़रूरतों, खेती-बाड़ी और त्योहारों के लिए लंबे समय से बांस पर निर्भर रहे हैं। टोकरी बनाने की यह कला और इसके तरीके परिवारों में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाए जाते हैं।

पूर्वी भारत के कारीगरों को बांस की बहुत गहरी समझ होती है—जैसे उसकी मजबूती, लचीलापन और उसे कब काटना चाहिए। इसी समझ के कारण वे ऐसी चीज़ें बना पाते हैं जो उपयोगी भी होती हैं और लंबे समय तक चलती भी हैं। ये टोकरियाँ न केवल घरों में काम आती हैं, बल्कि शादी-ब्याह और सामुदायिक कार्यक्रमों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कलाकार स्थानीय स्तर पर उपलब्ध बांस का उपयोग करते हैं और सावधानी से ऐसी किस्मों को चुनते हैं जिनसे अच्छी पट्टियाँ (strips) बनाई जा सकें।

स्थान
Location

यह ब्रोशर झारखंड के सरायकेला-खरसावाँ और ओडिशा के मयूरभंज व कोरापुट जिलों में रहने वाले बांस कलाकारों के बारे में है। पहाड़ों, जंगलों और खेतों से घिरे इन क्षेत्रों में बांस प्रचुर मात्रा में मिलता है, जो इस कला के फलने-फूलने के लिए बिल्कुल सही जगह है।

ओडिशा में: कोरापुट जिले के बैपारीगुड़ा, दसंतपुर, जेपोर, कुंद्रा और लक्ष्मीपुर में और मयूरभंज जिले के जमदा और रायरांगपुर में इसके समूह (clusters) फैले हुए हैं।
झारखंड में: यह कला सरायकेला-खरसावाँ जिले के नीमडीह और कुकरू ब्लॉक में फल-फूल रही है।

ब्लॉक: सरायकेला खरसावाँ (झारखंड) और मयूरभंज, कोरापुट (ओडिशा)

गाँव:

सरायकेला खरसावाँ में: सिमा, टेटलो, मटकाडीह
कोरापुट में: बनगुड़ा, गुमी, अपर टेलीमेटिंग, केरामती
मयूरभंज में: चांदपाल और कांडसोर

कैसे पहुँचें: मयूरभंज और सरायकेला-खरसावाँ के केंद्र टाटानगर से सड़क और रेल मार्ग द्वारा आसानी से जुड़े हुए हैं। टाटानगर से रायरांगपुर की दूरी 66 किमी और नीमडीह की दूरी 46 किमी है।

कोरापुट भी सड़क और रेल मार्ग से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। पास के हवाई अड्डे जगदलपुर, जेपोर और विशाखापत्तनम में हैं। यहाँ से रायगढ़ा, नवरंगपुर और जगदलपुर के लिए बसें और टैक्सियाँ चलती हैं। कोरापुट रेलवे स्टेशन से भी सुंदर सफर का आनंद लिया जा सकता है।

बनाने वाले
The Makers

यह कला कई पीढ़ियों से चली आ रही है और सभी कलाकारों के लिए एक पारिवारिक परंपरा है। ज़्यादातर कारीगर अपनी घरेलू ज़रूरतों के लिए चीज़ें बनाते हैं, लेकिन कुछ टोकरियाँ और ट्रे स्थानीय हाट (बाज़ार) में भी बेचे जाते हैं।

झारखंड के नीमडीह ब्लॉक में महाली समुदाय इस कला का नेतृत्व करता है। ओडिशा के मयूरभंज और कोरापुट जिलों के विभिन्न गाँवों में भी कलाकार सक्रिय हैं। आज, इस कला की कमान मुख्य रूप से महिलाओं के हाथों में है। बांस की गहरी समझ रखने वाले ये कलाकार न केवल टोकरियाँ बुनते हैं, बल्कि अपनी हिम्मत, विरासत और रचनात्मकता की कहानियाँ भी बुनते हैं।

शेफाली महाली	7870747278
ज्योत्सना महाली	8102167406
अनिल महाली	8292120213
मंजूरी महाली	9798573254
ममता मिश्रा	9938814954
गदुआ हंतल	6370986771

बनाने की प्रक्रिया

Process

01 काटना और पट्टियाँ बनाना

प्रक्रिया कच्चे बांस को इकट्ठा करने से शुरू होती है। कारीगर बांस को फाड़ने और छीलने के लिए 'काती' (मुड़ा हुआ चाकू) और 'घोड़ा' (लकड़ी का स्टैंड) जैसे पारंपरिक औजारों का उपयोग करते हैं।

काती (मुड़ा हुआ चाकू)

02 पहले बांस को आरी से टुकड़ों में काटा जाता है। फिर काती से उसकी हरी बाहरी परत हटाई जाती है। इसके बाद बांस को पतली पट्टियों में बाँटा जाता है। इन पट्टियों को 'घोड़ा' पर लगे चाकू की मदद से और पतला व लचीला बनाया जाता है। इन पट्टियों को 'पाती' कहा जाता है।

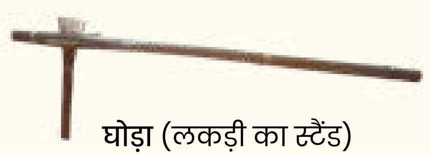

घोड़ा (लकड़ी का स्टैंड)

03 रंगना और भिगोना

पहले चूल्हे पर पानी गर्म किया जाता है, फिर उसमें रंग का पाउडर डाला जाता है। बांस की पट्टियों को इस रंगीन पानी में भिगोया जाता है ताकि वे रंग सोख लें। इसके बाद पट्टियों को सादे पानी से धोकर अतिरिक्त रंग हटाया जाता है।

04 बुनाई और फिनिशिंग

पट्टियों को एक-दूसरे के ऊपर-नीचे (criss-cross) रखकर बुनाई की जाती है। बुनाई आधार (base) से शुरू होकर ऊपर दीवारों तक की जाती है। फिनिशिंग के लिए छोटे हथौड़ों और सैंडपेपर का उपयोग किया जाता है। कहीं-कहीं चिपकाने के लिए गोंद का भी इस्तेमाल होता है।

01

02

03

04

उत्पाद

Products

पारंपरिक रूप से बांस हस्तशिल्प एक स्थानीय घरेलू उद्योग था, जो रोज़मर्रा की ज़रूरतों जैसे सूप (winnows) और टोकरियाँ बनाने पर केंद्रित था। ये उत्पाद पूरी तरह से पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ होते थे।

आज, ये कलाकार बाज़ार की नई माँगों के अनुसार बदलाव ला रहे हैं। वे बांस की पट्टियों को रंगकर और लकड़ी के साथ मिलाकर आधुनिक चीज़ें बना रहे हैं, जैसे कि सुंदर बक्से, लैंपशेड और दीवारों पर सजाने वाली चीज़ें। अपनी पुरानी कला को नई तकनीकों और डिज़ाइनों के साथ जोड़कर, ये कलाकार अब नए बाज़ारों तक पहुँच रहे हैं।

और उत्पादों के लिए स्कैन करें

दीवार शेल्फ़

टोकरियाँ और कंटेनर

लैंपशेड

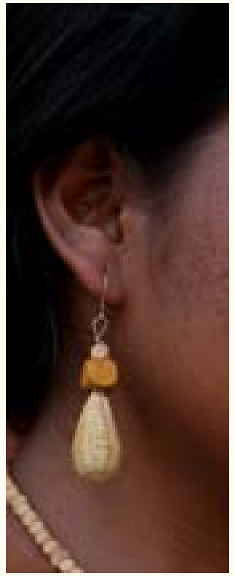

गहने

AXIS BANK FOUNDATION

Roots to Prosperity (समृद्धि की जड़ें)

'कॉन्टैक्ट बेस' ने सरायकेला-खरसावाँ, मयूरभंज और कोरापुट के कलाकारों की आजीविका को बेहतर बनाने के लिए 'एक्सिस बैंक फाउंडेशन' के साथ साझेदारी की है।

banglanatak.com
CONTACT BASE

indiaheritagehaat.com

Heritage4Prosperity

Heritage4Prosperity

banglanatak@gmail.com

+ 91 33 40047484/ 8420106396